विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, पौष पूर्णिमा, 16 जनवरी, 2014 वर्ष 43 अंक 7

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

उट्ठानकालम्हि अनुट्ठहानो, युवा बली आलसियं उपेतो।
संसन्नसङ्कप्पमनो कुसीतो, पञ्ञाय मग्गं अलसो न विन्दति॥

धम्मपद- २८०, मग्गवग्गो.

जो उद्योग करने के समय उद्योग नहीं करता, युवा और बलशाली होने पर भी आलस्य करता है, मन के संकल्पों को गिरा देता है, निर्वीर्य होता है - ऐसा आलसी (व्यक्ति) प्रज्ञा का मार्ग नहीं पा सकता।

आंतरिक शांति के धर्मदूत : श्री सत्यनारायण गोयन्का

(पिछले अंक से क्रमशः... -३-)

भारत से विश्व में

समय पक चुका था, ऐसा श्री गोयन्काजी को महसूस हुआ। प्राचीन भविष्यवाणी थी कि म्यमां से धर्म भारत लौटेगा। यह भविष्यवाणी तो सच हो गयी थी। लेकिन भविष्यवाणी यह भी थी कि धर्म भारत से पूरे विश्व में फैलेगा। यह भविष्यवाणी पूरी होनी थी।

इस कार्य को पूरा करने के लिए श्री गोयन्काजी को भारत से बाहर अन्य देशों में जाना आवश्यक था। लेकिन श्री गोयन्काजी के पास जो बरमी पासपोर्ट (पारपत्र) था वह केवल भारत के लिए था। उन्होंने बहुत प्रयास किया, पर अन्य देशों में जाने की अनुमति नहीं मिली। नहीं चाहते हुए भी उन्हें नागरिकता बदलनी पड़ी और इंडियन पासपोर्ट के लिए आवेदन करना पड़ा। इस प्रकार उन्हें मातृभूमि से पुनः नाता तोड़ना पड़ा, लेकिन विश्व का धर्मदूत बनने के लिए यह आवश्यक था।

उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भारतीय नागरिक बनना और नया पासपोर्ट पाना भी इतना आसान नहीं था। पहले तो गुप्तचरों ने पता लगाया कि श्री गोयन्काजी धम्मगिरि में करते क्या हैं। हर कदम पर विलम्ब हो रहा था। लेकिन अंततः सारी बाधाएं दूर हुई और श्री गोयन्काजी तथा माताजी पेरिस जाने के लिए हवाई जहाज पर सवार हुए। म्यमां से भारत आने के ठीक १० वर्ष बाद वे यहां से विदेश गये।

फ्रांस में उस वर्ष श्री गोयन्काजी ने दो शिविर संचालित किये। इसके बाद एक कनाडा में तथा दो शिविर यूनाईटेड किंगडम में संचालित किये। बड़ी संख्या में पुराने साधक आये। लेकिन वैसे लोग भी बहुत थे जिन्होंने पहले विपश्यना नहीं की थी। इसके बाद जाड़े में कुछ लोग धम्मगिरि आये। दो दशकों तक यही क्रम चलता रहा। इस बीच हर वर्ष श्री गोयन्काजी भारत से बाहर जाते। केवल यूरोप और उत्तरी अमेरिका ही नहीं बल्कि जापान, ताईवान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, श्रीलंका, थाईलैंड आदि अनेक देशों में गये और अंततः १९९० में वे पहली बार अपनी मातृभूमि म्यमां भी लौट सके। धीरे-धीरे इन देशों में तथा अन्य देशों में विपश्यना केन्द्र खुले। सब जगह विपश्यना सीखने तथा अभ्यास करने का अवसर प्रदान किया गया – ठीक वैसे ही जैसे कि श्री गोयन्काजी सिखाते हैं। उन्हीं नियमों के अनुसार सर्वत्र विपश्यना सिखायी जाने लगी।

(श्री सत्यनारायण गोयन्का, जनवरी ३०, १९२४ -- सितंबर २९, २०१३)

सन् २०१२ में श्री गोयन्काजी ने विश्व के सभी विपश्यना केंद्रों पर अपने उत्तराधिकारी के रूप में जिन्हें चुना था, उनके नाम दिये थे। (दिसंबर २०१२ में इसकी सूची प्रकाशित हुई थी।) हर क्षेत्र में सहायक आचार्य परिषद के सदस्य के रूप में हम एक साथ काम करते रहेंगे और अन्य सहायक आचार्यों के साथ सहयोग करते रहेंगे। विपश्यना के शिविर पहले की भांति ही लगते रहेंगे और धर्म का चक्र बहुतों के हित के लिए, बहुतों के सुख के लिए निरंतर चलता रहेगा।

एक नया केंद्र बिंदु

श्री गोयन्काजी का मिशन काफी प्रगति कर चुका था, लेकिन अब उनके सामने एक नयी समस्या थी कि इतनी बड़ी संख्या में विपश्यना सीखने वाले लोगों को वे कैसे सिखा सकेंगे? अब तक वे अकेले सिखाते थे। बड़े शिविरों की भी एक सीमा थी। अमुक संख्या में ही साधकों को व्यक्तिगत रूप से निर्देशित कर सकते थे। एक ही उत्तर था कि सिखाने वालों की संख्या बढ़े। अतः १९८१ के अंत में

(गेइयों, फ्रांस के पहले शिविर की समाप्ति पर साधकों के साथ १९७९)

अपने प्रतिनिधिस्वरूप उन्होंने पुराने पके हुए साधकों को प्रशिक्षण देकर सहायक आचार्य के रूप में नियुक्त करना प्रारंभ किया। उनसे कहा गया कि वे उनके रेकार्डेड निर्देशों और प्रवचनों के अनुसार शिविर संचालित करें। यह उचित ही था कि एक सहायक आचार्य द्वारा पहला शिविर यात्रियों की अतिथिशाला, बर्मी विहार, बोधगया में संचालित किया गया, जहां श्री गोयन्काजी ने बहुत समय बिताया था। यों कुछ महीनों के अंदर ही पूरे विश्व में ऐसे शिविर संचालित किये जाने लगे। आज १,२०० से अधिक सहायक आचार्य हैं जो प्रति वर्ष लगभग २,५०० से अधिक शिविरों का संचालन करते हैं जहां लगभग १५०,००० लोग १६० से अधिक स्थायी केंद्रों पर तथा अस्थायी केन्द्रों पर विपश्यना सीखने आते हैं। १९९४ से प्रारंभ कर, श्री गोयन्काजी ने बहुत अनुभवी सहायक आचार्यों को आचार्य के रूप में नियुक्त किया। पूरे विश्व में लगभग ३०० आचार्य हैं जो विश्वभर के विपश्यना केन्द्रों तथा अन्य विपश्यना शिविरों के कार्यक्रम निर्देशित कर रहे हैं।

सहायक आचार्यों की नियुक्ति ने श्री गोयन्काजी को अन्य बड़ी योजनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने में समर्थ बनाया। उन्होंने अब अपना अधिक समय सार्वजनिक भाषण देने तथा किन्हीं विशेष अवसरों पर भाषण देने में लगाया। जैसे कि २००० में वर्ल्ड इकोनामिक फोरम, डावोस, स्विट्जरलैंड और अगस्त २००० में विश्व शांति सम्मेलन, यू.एन.ओ. में भाषण दे कर लोगों को चकित किया। उन्होंने 'विपश्यना विशोधन विन्यास' की स्थापना की। यहां पालि भाषा में पाये जाने वाले बुद्ध के उपदेशों के सारे प्राचीन ग्रंथ देवनागरी लिपि में प्रकाशित करवाये एवं विभिन्न लिपियों में इनकी सीडी बनवा कर लोगों को मुफ्त उपलब्ध करवाया। दिल्ली के तिहाड़ जेल में तथा अन्य सुधार गृहों में निरंतर संचालित विपश्यना शिविरों से वहां के कैदियों में तथा लोगों में क्या क्या सुधार हुए इसका भी निरीक्षण करते रहे। अप्रेल १९९४ में तो उन्होंने एक हजार कैदियों का शिविर संचालित किया तथा बाल-शिविर भी संचालित किये। उन्होंने विपश्यना तथा बुद्ध की शिक्षा पर विस्तार से लिखा। मुंबई के निकट **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के निर्माण के लिए लोगों को प्रेरित किया। स्वेडेगोन पगोडा की प्रतिकृति वाले इस पगोडा का निर्माण इसलिए किया गया कि यह बहुतों को बुद्ध की शिक्षा के बारे में जानने के लिए आकर्षित कर सके। यह **म्यंमा तथा सयाजी** के प्रति **कृतज्ञता** ज्ञापित करने के प्रतीक स्वरूप भी है, क्योंकि म्यंमा तथा सयाजी ने ही विपश्यना का दान भारत को वापस लौटाया।

ज्यों ज्यों वर्ष बीतते गये श्री गोयन्काजी को सम्मान तथा उपाधियां मिलती रहीं। उनको 'विद्या वारिधि', 'वर्णकीर्ति', 'धम्ममूर्ति', 'महासद्धम्मज्योतिर्धज', 'महाउपासक विश्व विपश्यनाचार्य' आदि धर्म की अनेक उपाधियां दी गयीं। म्यंमा तथा श्री लंका की सरकारों ने उन्हें सरकारी अतिथि के रूप में निमंत्रित किया और उपाधियां प्रदान कीं। सन २०१२ में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' (सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक) की उपाधि से सम्मानित किया। श्री गोयन्काजी लगातार यही कहते रहे कि वस्तुतः ये सभी सम्मान और उपाधियां 'धर्म' के लिए दी गयीं।

जीवन के कुछ अंतिम वर्ष

जीवन के अंतिम वर्षों में श्री गोयन्काजी का स्वास्थ्य गिर रहा था। वे व्हील चेयर पर बैठे रहते, उनकी गंभीर आवाज कमजोर हो गयी थी, विस्तार से बोलना कठिन हो गया था। यद्यपि वे रोग और जरा के दुःख को अनुभव करते, फिर भी उन्होंने काम करना नहीं छोड़ा। जहां तक संभव था अपनी शक्ति के अनुसार वे धर्म सिखाते रहे और दूसरों को इसके अभ्यास के लिए प्रेरित करते रहे।

जैसे-जैसे उनकी प्रसिद्धि बढ़ी, वैसे-वैसे उनका सम्मान भी बढ़ा। लोग उनको बहुत सम्मान देने लगे थे और कुछ लोग उनको पारंपरिक भारतीय गुरु के रूप में देखते थे, यद्यपि इस भूमिका से उनका कुछ भी लेना-देना नहीं था। जब वे ग्लोबल पगोडा पर आते तो झुंड के झुंड लोग उनके स्पर्श के लिये आते, मानो लोगों को देने के लिए उनके पास कोई जादुई शक्ति थी। लोगों के इस तरह के व्यवहार से वे खिन्न हो जाते थे क्योंकि धर्मदूत के उनके काम से इसका दूर परे का भी संबंध नहीं था। न्यूयार्क में २००२ में सार्वजनिक व्याख्यान देने के बाद उन्होंने कहा था, मैं एक आम आदमी हूं। भारत में शिक्षक को 'गुरुजी' कहा जाता है और श्री गोयन्काजी के कुछ शिष्य उन्हें प्यार से गुरुजी कहते भी थे। लेकिन वे कहते कि यदि उन्हें किसी अभिनाम से अभिहित किया जाय तो उन्हें पालि भाषा में प्रयुक्त **'कल्याणमित्त'** कहा जाना अच्छा लगेगा, जिसका मतलब होता है कल्याण चाहनेवाला मित्र।

वे अपने शिष्यों को फोटो लेने से रोक नहीं सके, यद्यपि वे जब कैमरा उनकी ओर करते तो श्री गोयन्काजी उन्हें यह कह कर चिढ़ाया करते थे कि क्या मेरा बहुत-सा फोटो आपके पास नहीं है?

वे अपने फोटो के बारे में मजाक तो कर लेते, परंतु उन्होंने साधना कक्ष में या विपश्यना केन्द्रों के अन्य सार्वजनिक स्थानों पर

('ग्लोबल विपश्यना पगोडा', गोराई, मुंबई)

(धम्मधरा विपश्यना केंद्र, अमेरिका के परिसर में मंगल-मैत्री-पाठ करते हुए, पूज्य गुरुदेव एवं माताजी १९८० के दशक के मध्य में)

अपनी फोटो टांगने या लगाने की अनुमति कभी नहीं दी (केवल कार्यालय छोड़कर)। जब पूछा जाता कि क्या उन्हें बोधि की प्राप्ति हुयी तो उनका उत्तर होता जितना-जितना मैंने अपने मन को क्रोध, घृणा और द्वेष से मुक्त किया है, उतना-उतना मैंने बोधि की प्राप्ति कर ली है। उन्होंने यह दावा कभी नहीं किया कि उन्होंने किसी विशेष अवस्था की प्राप्ति कर ली है। ज्यादा से ज्यादा वे सौम्यता से यह कहते, हां मैं उन लोगों से मार्ग पर कुछ अधिक चला हूं जो अभी मुझसे धर्म सीखने आये हैं। शिविर के अंत में बहुत से साधक उनको धन्यवाद देने आते। उनका उत्तर बराबर एक सा होता – मैं तो सिर्फ एक माध्यम हूं, धन्यवाद दो धर्म को, और कठोर परिश्रम करने के लिए अपने आप को भी।

२०१० में उन्होंने कहा– जिस व्यक्ति ने धर्म यहां लाया उससे ज्यादा महत्वपूर्ण उसे भेजने वाले ऊ बा खिन हैं। बहुत पहले अशोक द्वारा भेजे गये उन धर्मदूतों के नाम को जो भारत के पड़ोसी देश में धर्म ले गये, लोग उन्हें भूल गये हैं परंतु अशोक को नहीं। इसलिए बुद्ध शासन के इस नये युग में लोग ऊ बा खिन को अवश्य याद रखें। लोग उन्हें याद करें या न करें – इसकी परवाह उन्हें नहीं थी।

तथापि श्री गोयन्काजी उन लोगों के लिए सदा अविस्मरणीय रहेंगे जो उन्हें जानते थे।

सयाजी ऊ बा खिन ने बहुत पहले कहा था "विपश्यना का डंका अब बज चुका है।" परंतु विश्व में बहुत से लोगों को धर्म का संदेश देने वाले व्यक्ति श्री गोयन्काजी ही थे। उनके लिए वे धर्म के जीवंत प्रतीक थे, यथा – प्रज्ञा, विनम्रता, करुणा, निःस्वार्थता और उपेक्षा या समभाव के। वे अक्सर धर्मरस के मिठास की बात करते। हॉल से बाहर जाते समय 'सबका मंगल हो, सबका मंगल हो,' कहते हुए ही बाहर आते। उनकी मीठी आवाज की तरह ही उनका मीठा व्यक्तित्व सदा याद रहेगा।

चाभियों का गुच्छा

यह कहानी श्री गोयन्काजी दस-दिवसीय शिविर के समापन प्रवचन में कहते हैं :–

एक बूढ़ा, बहुत धनवान व्यक्ति, बुढ़ापे में विधुर हो गया। विधुर हो गया, माने घरवाली स्वर्ग सिधार गयी। और अपने यहां तो घरवाली, वही गृहलक्ष्मी। घर में जो अन्न-धन भंडार, उसकी चाभियां तो उसके पास रहें। अब वह तो चली गयी। यह चाभियों का गुच्छा किसको दे? संयुक्त परिवार है, चार पुत्र हैं तो चार बहुएं हैं। चारों को तो दे नहीं सकता। तो चारों को बुलाकर कहता है– मैं परीक्षा लूंगा और यह चाभी का गुच्छा उसको मिलेगा जो परीक्षा में सबसे अव्वल नंबर, ऊंचे नंबर लेकर आयगी।

क्या परीक्षा लूंगा? तो ये पांच दाने, ये पांच दाने अनाज के, ये पांच दाने अनाज के – चारों को पांच-पांच दाने दे दिए, और कहा चार वर्ष के बाद आऊंगा। जो इन पांच दानों को संभाल कर रखेगी, उसको चाभी का गुच्छा। अरे, जो पांच दाने अनाज के नहीं संभाल सकती, वह इतना बड़ा अन्न-धन भंडार कैसे संभालेगी? बस, यही परीक्षा है हमारी।

बूढ़ा चला गया। बड़ी बहू ने सोचा यह बूढ़ा सठिया गया। कोई बात हुई? ये पांच दाने? अरे, चार बरस तक, भेजा खराब हो जायगा याद करते-करते, फेंक न! वह आयगा तो अपने भंडार में से दूसरे पांच दाने लेकर दे दूंगी – ले तेरे पांच दाने। बात खत्म हो जायगी। फेंक दिए उसने।

दूसरी ने सोचा कि बात तो ठीक है। चार बरस तक इनकी चिंता करना समझदारी की बात नहीं। लेकिन बूढ़ा बड़ा अनुभवी है, बड़ा घाघ है। उसको जीवन-भर का अनुभव है। कौन जाने इन्हीं पांच दानों में कोई करामात हो, चमत्कार हो। चार वर्ष के बाद आयगा तब कहेगा कि खा ले। और खाते ही तो "पुत्रवती भव", "सौभाग्यवती भव", न जाने क्या-क्या भव हो जायगा? तो अभी क्यों न खा लूं? वह आयगा तो दूसरे पांच दाने दे दूंगी। खा गयी।

तीसरी को तो चाभी का गुच्छा दिखे। चाभी का गुच्छा चाहिए। तो अपने पूजा के कमरे में एक चांदी की डब्बी में पांचों दाने रखकर, रोज सुबह-शाम जैसे अपने देवताओं को जाकर संभाल ले, वैसे जाकर इन पांच दानों को भी संभाल ले। चार बरस तक खूब पहरेदारी की।

चौथी ने पांचों दाने लिए, घर के पिछवाड़े की जमीन साफ की। पांचों दाने बो दिए। समय पाकर पांच पौधे निकल आये। एक-एक पौधे में सौ-सौ दाने आ गये। अगले मौसम में पांच सौ के पांच सौ बो दिए। अगले मौसम जितने आये, वे बो दिए। अरे चार वर्ष में तो मनों अनाज हो गया, टनों अनाज हो गया। गोदाम भर गया।

बूढ़ा आया। सबने अपनी-अपनी राम-कहानी कह सुनायी। चौथी ने कहा, महाराज! आपके पांच दाने इतने बढ़ गये, गोदाम भर गया। मजदूर लाइये और उठाइये वहां से। बूढ़े ने कहा – यह बेटी काम की। इसने संभालकर ही नहीं रखा, इसने संवर्धन भी किया।

तो इस बूढ़े ने भी पांच दाने धर्म के दिये हैं, संभालकर ही नहीं रखना, खूब संवर्धन करना। खूब संवर्धन करना। और हम तो यह चाभियों का गुच्छा भी अपने साथ नहीं ले जाते। हर एक के पास छोड़कर जाते हैं, सबके पास अपना-अपना चाभी का गुच्छा। धर्म में खूब पको, खूब पको; और खोलो दरवाजा। स्वर्गीय सुख का दरवाजा भीतर खोलो। खूब पको, खूब पको, ब्राह्मी आनंद का दरवाजा भीतर खोलो। खूब-खूब पको, निर्वाणिक परम सुख का दरवाजा भीतर खोलो। चाभी अपने ही हाथ में है।

खूब पको धर्म में, खूब पको धर्म में। बड़ा मंगल है, बड़ा कल्याण है। बड़े भाग्य से, बड़े पुण्य से प्राप्त होता है धर्म।

सबका मंगल हो!

*(यह लेख विपश्यना के आचार्य मि. विलियम हार्ट द्वारा अपने तथा अनेक साधकों के अनुभवों के आधार पर लिखा गया और २२ अक्टूबर को **'विपस्सना न्यूजलेटर'** के अंतर्राष्ट्रीय संस्करण (१९७४ से त्रैमासिक) में सचित्र सोलह पृष्ठों में प्रकाशित हुआ। उनकी अनुमति से इसका हिंदी अनुवाद 'विपश्यना विशोधन विन्यास' द्वारा संपन्न हुआ और भारत के मासिक संस्करणों 'विपश्यना' हिंदी तथा 'विपस्सना न्यूजलेटर' अंग्रेजी में क्रमशः तीन अंकों में सचित्र प्रकाशित हो रहा है।)*

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

बुद्धपूर्णिमा के शुभ अवसर पर पूज्य माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

18 मई, 2014, **रविवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। यहां **3 बजे** से **दिवंगत गुरुदेव के रेकार्डेड प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं।** कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं।** बुकिंग संपर्क : फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

आवश्यक सूचना--

अनेक साधकों के पत्र आते हैं कि उन्हें पत्रिका नहीं मिल रही है, जबकि वे इसके आजीवन सदस्य हैं। यह हमारी ओर से समय पर अवश्य पोस्ट हो रही है और नाम-पते भी चेक किये गये हैं परंतु डॉक-विभाग के लोग सहयोग नहीं कर रहे हैं। अतः कृपया अपनी शिकायत स्थानीय डॉक-कार्यालय में दर्ज करायें और उसकी प्रति/सूचना हमें भी लिखित भेजें, ताकि इस पर उचित कार्यवाही की जा सके। (सं.)

मराठी में 'विपश्यना पत्रिका'

कई साधकों की मांग है कि विपश्यना पत्रिका हिंदी की तरह मराठी में भी प्रकाशित हो तो गांव के लोगों को अधिक लाभ होगा। इस विषय में हम सभी मराठी भाषी साधकों के विचार जानना चाहते हैं। यदि आपको हिंदी के बदले मराठी चाहिए तो कृपया अपने विचार तथा हिंदी पत्रिका पर लिखी अपनी ग्राहक संख्या और नाम - पोस्टकार्ड पर लिख कर या ईमेल से यथाशीघ्र सूचित करें। विपश्यना विशोधन विन्यास का पूरा पता एवं ईमेल पत्रिका के अंत में नीचे लिखा हुआ है। (सं.)

धम्मचक्क, सारनाथ विपश्यना केंद्र पर पगोडा-निर्माण

धम्मचक्क, सारनाथ विपश्यना केंद्र पर पगोडा निर्माण की योजना चल रही है। जो भी साधक भाई-बहन इस पुण्यार्जन में भागीदार होना चाहें, वहां के व्यवस्थापक से संपर्क कर सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव के साथ धम्म-अनुभव के क्षण

यदि आप के कुछ प्रेरणास्पद धम्म-अनुभव पूज्य गुरुदेव के साथ हुए हों या कोई प्रेरणास्पद धर्मचर्चा हुई हो तो कृपया लिख कर भेज दें। चुने हुए अनुभवों का संग्रह पुस्तकाकार प्रकाशित करने की योजना है। धन्यवाद!

समन्वयक आचार्य (एरिया टीचर) (परिवर्तन)

(श्री लक्ष्मीनारायण तोदी के खराब स्वास्थ्य के कारण निम्न परिवर्तन किये गये हैं:--)

१. श्रीमती गीता केडिया-- प. बंगाल, उड़ीसा, त्रिपुरा, मिजोरम, आसाम, अरुणाचल प्रदेश एवं बंगलादेश

केंद्र आचार्य-परिवर्तन

१. श्रीमती गीता केडिया-- धम्मगङ्गा, कोलकाता, सहायक- श्री विनोद चिरीपाल
२. श्री मोहन देवान-- धम्मपुरी, त्रिपुरा, सहायक- विमलकांति चकमा

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. कु. बेला वरसानी, राजकोट
२. श्री मधुकर हरिभाऊ लामसे, अमरावती
3. Mrs. Therese Bisson-Rowe, New Zealand
4. Mr. Ramesh Kumar, USA

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्री मधुकर क्षिरसागर, चंद्रपुर
२. श्रीमती अरुणा निसवदे, गडचिरोली
३. श्रीमती शैला धवले, अमरावती
४. श्रीमती शकुंतला तेलंग, नागपुर
५. श्री सरस्वती नारनवरे, नागपुर
६. श्री पंचम खादीपुरे, नागपुर
७. श्री प्रवीण राउत, नागपुर
८. श्रीमती वीना रामटेके, भंडारा
९. श्री हरिश्चंद्र दहीवाले, भंडारा
१०. श्री संजीव शाहरे, गोंदिया
११. श्री महेंद्रकुमार सोमकुँवर, छिंदवाड़ा
१२. श्री उमेश कुमार चौकीकर, बेतुल
१३. श्री धमपाल तकसांदे, यवतमाल
१४. डॉ. संजय कुसरे, यवतमाल
१५. कु. आशा लोंगानी, जयपुर
१६. श्री अर्जुन, जयपुर
१७-१८. श्री गंगादास एवं श्रीमती विजया जांभुलकर, भिलाई, छत्तीसगढ़
१९. श्रीमती नीतू रामटेके, बल्लोद, छत्तीसगढ़
२०. श्रीमती पूनम गोयल, देहरादून
२१. श्री मुकेश भारद्वाज, रुड़की
२२. डॉ. सुरेखा सिंह, हरिद्वार
२३. डॉ. दुलाल कांतिदास, कोलकाता
२४. श्रीमती जया मुंसी, कोलकाता
२५. श्री सचिन इनामदार, पुणे
26. Ms Weijun Jian, China
27. Ms Zhang Yan, China
28. Mr MA Dafeng, China

शिविर-समापन-प्रवचन के पूर्व पूज्य गुरुदेव द्वारा कृतज्ञता ज्ञापन के दोहे

नमस्कार है बुद्ध को, कैसे करुणागार!
दुःख मिटावन पथ दिया, सुखी करन संसार॥
नमस्कार है धरम को, कैसा पावन पंथ।
इस पथ पर जो भी चले, सहज बन गए संत॥
नमस्कार है संघ को, कैसे श्रावक संत।
धर्म धार उजले हुए, निर्मल हुए भदंत॥
नमस्कार अरहंत को, नमस्कार सब संत।
नमस्कार जननी जनक, है उपकार अनंत॥

नमस्कार गुरुदेव को, कैसे संत सुजान।
कितने करुणा चित्त से, दिया धरम का दान॥
ऐसा चखाया धरम रस, बिषयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥
रोम रोम किरतग हुआ, ऋण न चुकाया जाय।
दुखियन बांटूं धरम सुख, यह ही एक उपाय॥
इस सेवा के पुण्य से, धरम उजागर होय।
जन जन का हित-सुख सधे, सब का मंगल होय!!

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email:arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: **morolium_jal@yahoo.co.in**
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2557, पौष पूर्णिमा, 16 जनवरी, 2014**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org